



Literacy for a Billion

Movie: Gadar Ek Prem Katha

Year: 2001

Song: Ud ja kale kawa (female)

Lyricist: Anand Bakshi

उड़ जा काले कावाँ
तेरे मुँह विच खंड पावाँ
तारा
ले जा तू संदेसा मेरा
मैं सदके जावाँ
बागों में फिर झूले पड़ गए
पक गईयां मिठीआँ अंबीया
ये छोटीसी जिंदगी ते
रातां लंबीयां लंबीयां
ओ घर आजा परदेसी
के तेरी मेरी इक जिंदड़ी
ओ घर आजा परदेसी
के तेरी मेरी इक जिंदड़ी
हो...
कितनी दर्द भरी है
तेरी मेरी प्रेम कहानी
कितनी दर्द भरी है
तेरी मेरी प्रेम कहानी
सात संमुदर जितना
अपनी आँखों में है पानी
मैं दिल से दिल मुझसे करता
हो...
मैं दिल से दिल मुझसे करता
है जब तेरी बातें
सावन आने से पहले
हो जाती है बरसातें
ओ घर आजा परदेसी
के तेरी मेरी
ओ घर आजा परदेसी

ओ घर आजा परदेसी
ओ घर आजा परदेसी
के तेरी मेरी इक जिंदड़ी
ओ घर आजा परदेसी
के तेरी मेरी इक जिंदड़ी

ओ... हो...
ओ... हो...
आ...
पर्वत कितने ऊँचे
कितने गहरे होते हैं
हो...
पर्वत कितने ऊँचे
कितने गहरे होते हैं
कुछ मत पुछो
प्यार पे कितने पहरे होते है
इश्क में जाने क्या हो जाता है
ये रब ही जाने
तोड़ के सारी दीवारें
मिल जाते है दीवानें
ओ ले जा मुझे परदेसी
के तेरी मेरी इक जिंदड़ी
ओ ले जा मुझे परदेसी
के तेरी मेरी इक जिंदड़ी
हाँ ले जा मुझे परदेसी
के तेरी मेरी इक जिंदड़ी
ओ ले जा मुझे परदेसी
के तेरी मेरी इक जिंदड़ी

PlanetRead is a tax-exempt, not-for-profit: 501(c) (3) in the United States and 80(G) in India.



Literacy for a Billion

Disclaimer: PlanetRead does not own these lyrics and is not using them for any commercial purpose. For over 20 years, PlanetRead has been subtitled Bollywood songs for mass literacy. These lyrics are being offered as part of PlanetRead's literacy development initiative.

PlanetRead is a tax-exempt, not-for-profit: 501(c) (3) in the United States and 80(G) in India.